KU Newsletter

October 2025/ Edition 7, Vol. 1 भाद्रपद, विक्रम संवत १० ८२

www.kuk.ac.in

नवाचार और भविष्य की ओर कदम : केयू ने किया एमओयू

शोध, इंजीनियरिंग व उद्यमिता में नई क्रांतिः कुवि का ध्येय – कुलपति

कुवि। नवाचार और भविष्य की ओर बढ़ते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने ईपीआईसी (उद्यमिता संवर्धन और ऊष्मायन परिषद) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा की अध्यक्षता में 24 सितम्बर को आयोजित हुआ। एमओयू पर कुवि की ओर से प्रो. संजीव अग्रवाल तथा ईपीआईसी की ओर से निदेशक नरेश गुप्ता ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि इस एमओयू का मकसद शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को नई गति देना है। यह समझौता युवाओं के लिए ऐसे रास्ते खोलेगा, जिन पर चलकर वे न केवल अपने सपनों को साकार कर सकेंगे बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए भी तैयार होंगे। उन्होंने भरोसा जताया कि इस साझेदारी से नई तकनीकों का विकास होगा और शोध की दिशा को नई ऊर्जा मिलेगी। प्रो. सचदेवा ने स्पष्ट कहा कि आज इंजीनियरिंग को करियर के रूप में अपनाने में छात्रों की रुचि घट रही है, जिसका बड़ा कारण विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का सिकुड़ना है।

उन्होंने कहा "यह स्थिति हमें सोचने पर मजबूर करती है कि हम उद्योग जगत के लिए ऐसे इंजीनियर तैयार करें जो शोध, उत्पाद विकास और उत्पादन जैसे क्षेत्रों में सार्थक योगदान दे सकें। देश को नौकरी तलाशने वाले युवाओं से अधिक ऐसे उद्यमियों की आवश्यकता है, जो नए उद्योग खड़े करें और समाज के लिए रोजगार के नए द्वार खोलें। रूसा नोडल अधिकारी प्रो. संजीव अग्रवाल ने कहा कि ईपीआईसी द्वारा प्रदान किया गया मंच छात्रों को उद्यमिता की ओर ले जाने का एक जीवंत अवसर है। उनका मानना है कि यदि छात्रों को उनकी पढ़ाई के दौरान ही उद्यमिता की दिशा में प्रेरित किया जाए, तो उनकी प्रतिभा को निखारने और पोषित करने का सबसे उपयुक्त माहौल तैयार किया जा सकता है। कोऑर्डिनेटर डॉ. अजय जांगड़ा ने बताया कि इस सहयोग से छात्रों को पढ़ाई के साथ–साथ व्यवहारिक अनुभव भी मिलेगा।

समझौते से छात्रों को क्या मिलेगा

- प्रशिक्षण और वर्कशॉप
- संयुक्त शोध परियोजनाएँ
- उद्यमिता का वास्तविक अनुभव

ईपीआईसी की भूमिका

ईपीआईसी के निदेशक नरेश गुप्ता ने कहा कि परिषद का उद्देश्य केवल प्रशिक्षण देना नहीं, बल्कि छात्रों के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना है जहाँ वे अपने विचारों को खुलकर व्यक्त कर सकें। ईपीआईसी का प्रयास है कि छात्र केवल सिद्धांत तक सीमित न रहें, बल्कि अपने नवाचार को व्यवहारिक रूप दें और समाज की जरूरतों के अनुरूप समाधान तैयार करें। इससे उनकी सोच में आत्मविश्वास आएगा और वे अपने भविष्य को नए दृष्टिकोण से देख पाएँगे।

भविष्य की तस्वीर

यह समझौता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के छात्रों को केवल नई दिशा ही नहीं देगा, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की राह भी खोलेगा। कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने विश्वास जताया कि इस पहल से शिक्षा और शोध को नई ऊर्जा मिलेगी और छात्रों में नवाचार की लहर पैदा होगी। उन्होंने कहा कि यह एमओयू विश्वविद्यालय के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा क्योंकि इसके माध्यम से छात्र वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार होंगे। आने वाले समय में यहाँ से ऐसे उद्यमी और शोधकर्ता निकलेंगे जो समाज और राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका निभाएँगे।

कुलपति ने यह भी उल्लेख किया कि इस साझेदारी से न केवल विश्वविद्यालय की शैक्षणिक पहचान मजबूत होगी, बल्कि यह छात्रों को उद्योग जगत से जोड़ते हुए रोजगार सृजन और नवाचार आधारित विकास की राह भी प्रशस्त करेगी।

तस्वीर में कैद हुआ संघर्ष, शिक्षक को मिला राष्ट्रपति पुरस्कार

डॉ. आनन्द ने सफलता का श्रेय कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा और सहकर्मियों को दिया

कुवि। डॉ प्रदीप राय

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के एक शिक्षक ने कैमरे से ऐसा अनोखा फ्रेम रचा, जिसमें एक बुजुर्ग का संघर्ष और उनकी रचनात्मक संवेदना तो थी ही, पर उसी फ्रेम में विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय उपलब्धि भी दर्ज हो गई। विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग के शिक्षक डॉ. आनन्द जायसवाल को इसी अनोखी तस्वीर के लिए राष्ट्रपति से राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यह उपलब्धि आसान नहीं थी। पूरे भारत से 5,922 कलाकारों ने अपनी फोटोग्राफी और पेंटिंग्स प्रतियोगिता में भेजी थीं। इनमें से 283 का चयन प्रदर्शनी के लिए हुआ और मात्र 20 कलाकार राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुने गए। इस दुर्लभ सूची में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ. आनन्द भी शामिल हुए।

केयू न्यूज लेटर से बातचीत में वे बताते हैं की "इस प्रतियोगिता में केवल पिछले दो साल में खींची गई तीन तस्वीरें ही भेजी जा सकती थीं। मैंने दो साल में 10,000 से अधिक फोटो खींचे थे। उनमें से तीन चुनना समंदर मापने जैसा था। अंततः 2023 में बांग्लादेश के नदी किनारे खींची तस्वीर को चुना और वही निर्णायक साबित हुई।" तस्वीर के बारे में पूछने पर डॉ. आनन्द कहते हैं "उसमें 75–77 साल का एक बुजुर्ग था, जो डीजल का खाली ड्रम साफ कर रहा था ताकि कुछ पैसे कमा सके। उसकी मेहनत और पीड़ा इतनी गहरी थी कि वह मेरी आँखों और कैमरे दोनों में उतर गई। डॉ. आनंद ने कहा कला तभी पूर्ण होती है जब समाज का सुख–दुःख कलाकार की आत्मा तक पहुँचे। मुझे फोटो की गुणवत्ता पर भरोसा था, पर इतना बड़ा सम्मान मिलेगा, यह उम्मीद नहीं थी,सब कुछ अप्रत्याशित परिणाम लेकर आया।

पुरस्कृत तस्वीर

एनआईआरएफ 2025 में कुवि की शानदार छलांग, हरियाणा का बढ़ा मान

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने जारी की रैंकिंग, कुवि ने हासिल किया 35वां स्थान

कुवि। कुवि ने एक बार फिर अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता का परचम लहराते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की एनआईआरएफ (नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क) 2025 में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। विश्वविद्यालय ने स्टेट पब्लिक यूनिवर्सिटी कैटेगरी में 53.56 अंक प्राप्त कर 35वां स्थान प्राप्त किया है। यह उपलब्धि न केवल संस्थान बल्कि पूरे हरियाणा के लिए गर्व का विषय है। कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने इस उपलब्धि पर कुवि परिवार को बधाई देते हुए कहा कि ष्यह सफलता शिक्षकों, शोधकर्ताओं, स्टाफ और विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम है।

रैंकिंग में सुधार, सभी मानकों पर बढ़तः

पिछले वर्ष की तुलना में कुवि ने उल्लेखनीय सुधार किया है। स्कोर 50.47 से बढ़कर 53.56 हो गया और रैंकिंग 41 से सुधरकर 35 पर पहुँच गई।

- टीचिंग–लर्निंग रिसोर्सेज 55.2 से बढ़कर 59.03
- रिसर्च एवं प्रोफेशनल प्रैक्टिस 25.14 से बढ़कर 31.19
- ग्रेजुएट आउटकम 60.75 से बढ़कर 62.07

यह सुधार अनुसंधान गतिविधियों और शैक्षणिक गुणवत्ता में निरंतर प्रगति का प्रमाण है।

अनेक उपलब्धियों का गौरवः

- हरियाणा का सबसे पुराना और "मदर यूनिवर्सिटी" कहलाने वाला यह विश्वविद्यालय 1956 में प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा स्थापित किया गया था।
- नैक द्वारा ए–प्लस–प्लस ग्रेड हासिल करने वाला हरियाणा का इकलौता सरकारी विश्वविद्यालय।
- यूजीसी की कैटेगरी–वन सूची में आठवां स्थान।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को पूर्णतरू लागू करने वाला देश का पहला विश्वविद्यालय।
- अब तक 60 से अधिक पेटेंट दर्ज कराए जा चुके हैं।

खेल और संस्कृति में अग्रणीः

कुवि ने देश की सबसे प्रतिष्ठित मौलाना अबुल कलाम आजाद (माका) ट्रॉफी में लगातार दो वर्षों तक तीसरा स्थान हासिल किया है। सांस्कृतिक गतिविधियों में भी कुवि ने सरकारी विश्वविद्यालयों में पहला और राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

रिसर्च और नवाचार में छलांगः

पिछले शैक्षणिक सत्र में कुवि को 11 करोड़ रुपये के 6 स्पॉन्सर्ड रिसर्च प्रोजेक्ट्स मिले, जिनमें 10 करोड़ का मटेरियल साइंस प्रोजेक्ट शामिल है। नए एप्रेंटिसशिप एम्बेडेड प्रोग्राम्स और ऑनर्स कोर्सेज की शुरुआत की गई है। वर्तमान में 10 हजार से अधिक विद्यार्थी ऑनलाइन प्रोग्राम्स से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

भविष्य की राहः

कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि "कुवि ने कई पुराने और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से बेहतर प्रदर्शन कर हरियाणा की पहचान मजबूत की है। भविष्य में हमारा लक्ष्य शोध गतिविधियों और नवाचार के माध्यम से रैंकिंग को और ऊँचाइयों तक ले जाना है।"

सेवा से स्वच्छता का संदेश : कुलपति बोले, पर्यावरण संतुलन की डगर पर कुवि

कुवि। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन (17 सितम्बर) के अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (कुवि) परिसर में सेवा पखवाड़े की शुरुआत कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने की। इस मौके पर उन्होंने कहा कि स्वच्छता अभियान केवल परिसर को साफ–सुथरा रखने का प्रयास नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण संतुलन बनाए रखने और समाज सेवा की भावना को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

उन्होंने कहा कि स्वच्छता अभियान हमें यह सीख देता है कि हम सभी अपने परिवेश के प्रति जिम्मेदार बनें। इस प्रकार के आयोजन छात्रों और शिक्षकों को पर्यावरण संरक्षण तथा सामुदायिक सेवा की ओर प्रेरित करते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर आयोजित इस पहल को सकारात्मक संदेश का वाहक बताया और कहा कि ऐसे कार्यक्रम समाज को यह याद दिलाते हैं कि स्वच्छता केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं बल्कि नागरिक कर्तव्य भी है।संदेश लें और विद्यार्थी इध ार–उधर भटकने की बजाए अपनी पढ़ाई पर फोकस करें। मेहनत से किया गया कार्य हमेशा सफल होता है। कुलसचिव डॉ. विरेंद्र पाल ने अंत में सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी अपने लक्ष्य निर्धारित कर मेहनत से अपना लक्ष्य प्राप्त करें। मंच का संचालन युवा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम विभाग के निदेशक प्रो. विवेक चावला ने किया।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. विरेंद्र पाल, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. दिनेश कुमार, डीएसडब्ल्यू प्रो. एआर चौधरी, प्रो. अनिल गुप्ता, प्रो. डीएस राणा, प्रो. आनंद कुमार, प्रो. जसबीर ढांडा, प्रो. अनिल मित्तल, प्रो. सुशील शर्मा, प्रो. उषा, प्रो. कृष्णा, प्रो. अनिता दुआ, प्रो. विवेक चावला, लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया एवं अन्य विद्वान शिक्षकों के साथ विद्यार्थी उपस्थित थे।

अधिकारियों ने उठाया झाड़ू

कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा, कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल तथा विश्वविद्यालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वयं झाड़ू लगाकर अभियान की शुरुआत की। इस दौरान उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि जब शीर्ष पदाधिकारी स्वयं स्वच्छता अभियान में भाग लेते हैं, तो यह संदेश और भी प्रभावी बन जाता है।

ग्रीन के साथ क्लीन कैंपस की अपील

कुलपति ने कहा कि कुवि को पहले ही ग्रीन कैंपस अवार्ड मिल चुका है। अब हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि इसे ग्रीन के साथ क्लीन कैंपस भी बनाया जाए। उन्होंने विद्यार्थियों और कर्मचारियों से अपील की कि वे कक्षा और आसपास के स्थानों पर हमेशा साफ–सफाई का ध्यान रखें। जापान का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वहां लोग सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी मानते हैं। यही आदत हमें भी विकसित करनी चाहिए।

पौधारोपण से पर्यावरण संरक्षण

सेवा पखवाड़े के अंतर्गत कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा और अधिकारियों ने पौधारोपण भी किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि स्वस्थ पर्यावरण के लिए पौधारोपण अत्यंत आवश्यक है। पेड़–पौधे न केवल वायु को शुद्ध करते हैं बल्कि जल संरक्षण और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने मेंमदद मिलती है।

लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया ने बताया कि महानिदेशक उच्चतर शिक्षा, हरियाणा पंचकूला के निर्देशानुसार कुवि में 17 सितम्बर से 2 अक्तूबर तक सेवा पखवाड़ा मनाया जाएगा। इसके अंतर्गत स्वच्छता अभियान, प्लास्टिक उन्मूलन, साइकिल रैली, नशा उन्मूलन अभियान और प्रधानमंत्री के जीवन एवं विचारों पर संगोष्ठी आयोजित होगी।

बड़ी संख्या में शिक्षक–विद्यार्थियों की भागीदारी

इस अवसर पर कुवि छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. ए.आर. चौधरी, प्रो. डी.एस. राणा, प्रो. नरेन्द्र सिंह, लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया, डॉ. आनन्द कुमार, डॉ. चेतन शर्मा, कुटा प्रधान डॉ. जितेन्द्र खटकड़, उपकुलसचिव डॉ. जितेन्द्र जांगड़ा, कुंटिया प्रधान राजवंत कौर सहित एनएसएस, एनसीसी और यूथ रेडक्रॉस वॉलंटियर्स, शिक्षक, विद्यार्थी तथा गैर–शिक्षक कर्मचारी बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

प्लास्टिक मुक्त परिसर पर बल

कुलपति ने सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग को पूरी तरह समाप्त करने की अपील की। उन्होंने कहा कि यह आज के समय में पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा खतरा है। प्लास्टिक का विकल्प अपनाना और उसके उपयोग को रोकना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है।

प्रो. राकेश कुमार बने डीन एकेडमिक अफेयर्स, प्रो. विनोद कुमार ने संभाला डीन फैकल्टी ऑफ साइंसेज का कार्यभार

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के आदेशानुसार विश्वविद्यालय के दो वरिष्ठ शिक्षाविदों ने 19 सितम्बर को अहम दायित्व संभाले। कंप्यूटर साइंस एंड एप्लीकेशन विभाग के प्रो. राकेश कुमार ने डीन एकेडमिक अफेयर्स तथा गणित विभाग के प्रो. विनोद कुमार ने डीन फैकल्टी ऑफ साइंसेज का पदभार विधिवत रूप से ग्रहण किया।

लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया ने बताया कि पदभार ग्रहण करते हुए दोनों अधि ाकारियों ने कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि यह जिम्मेदारी उनके लिए गर्व और सेवा का अवसर है। डीन एकेडमिक अफेयर्स के रूप में प्रो. राकेश कुमार ने कहा कि यह पद विश्वविद्यालय की शैक्षणिक दिशा तय करने में महत्वपूर्ण है और वह पूर्ण समर्पण के साथ इसे नई ऊँचाइयों तक ले जाने का प्रयास करेंगे। डीन फैकल्टी ऑफ साइंसेज के रूप में प्रो. विनोद कुमार ने कहा कि विज्ञान संकाय को और मजबूत बनाना उनकी प्राथमिकता होगी तथा शिक्षण, शोध और नवाचार को नई दिशा देने के लिए वे सक्रिय रहेंगे। दोनों अधि ाकारियों ने आश्वासन दिया कि वे विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को और सुदृढ़ करने के लिए निरंतर कार्य करेंगे। इस अवसर पर प्रो. दिनेश कुमार, प्रो. मंजूला चौधरी, प्रो. राजेन्द्र नाथ, प्रो. संजीव शर्मा, प्रो. कृष्णा, प्रो. कुलदीप सिंह, प्रो. अनिता भटनागर, प्रो. शुचिस्मिता, प्रो. भगवान सिंह, डॉ. जितेन्द्र भारद्वाज, डॉ. लता खेड़ा, डॉ. महेन्द्र सिंह और अशोक गौड़ सहित अनेक शिक्षक और कर्मचारी मौजूद रहे।

डॉ. कुलदीप सिंह को मिला भारतीय भाषा सम्मान 2025

कुवि कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने दी बधाई, पंजाबी भाषा एवं साहित्य में योगदान को सराहा

कुवि। पंजाबी विभाग के अध्यक्ष डॉ. कुलदीप सिंह को 14 सितम्बर 2025 की पूर्व संध्या पर महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी में हिंदुस्तान समाचार एजेंसी द्वारा आयोजित भव्य समारोह में भारतीय भाषा सम्मान 2025 से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने डॉ. कुलदीप सिंह को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय है। कुलपति ने कहा कि डॉ. कुलदीप सिंह ने पंजाबी भाषा और साहित्य के उत्थान में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है और उनकी यह उपलब्धि विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रतिष्ठा को और बढ़ाती है। कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने भी डॉ. कुलदीप सिंह को इस सम्मान के लिए शुभकामनाएँ दीं और कहा कि ऐसे सम्मान विश्वविद्यालय के समग्र विकास और शोध कार्य को प्रोत्साहित करते हैं। डॉ. कुलदीप सिंह ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय भाषा सम्मान 2025 उनके लिए अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है। उन्होंने बताया कि यह सम्मान उन्हें जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ पदाधि ाकारी और हिंदुस्तान समाचार के अध्यक्ष अरविन्द भालचंद्र मार्डीकर सहित अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में प्रदान किया गया। डॉ. कुलदीप सिंह ने कहा कि यह पुरस्कार उन्हें भाषा और साहित्य के क्षेत्र में और अधिक सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने बताया कि उनका उद्देश्य पंजाबी भाषा और साहित्य को विद्यार्थियों और शोधकर्ताओ तक पहुँचाना और इसके महत्व को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना है। उन्होंने सभी छात्रों और शिक्षकों को यह संदेश भी दिया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति और सामाजिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनेक शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित रहे, जिन्होंने डॉ. कुलदीप सिंह की उपलब्धि को सराहा और इसे विश्वविद्यालय के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताया।

शहीद भगत सिंह से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें युवा: कुलपति

कुवि में शहीद भगत सिंह की जयंती पर कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने अर्पित किए श्रद्धासुमन

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में 28 सितम्बर को शहीद भगत सिंह की जयंती के अवसर पर कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा, कुलसचिव लेफ्टिनेंट डॉ. वीरेन्द्र पाल सहित विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने विश्वविद्यालय मार्किट स्थित शहीद भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कुलपति प्रो. सचदेवा ने कहा कि शहीद भगत सिंह का जीवन युवाओं के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने आह्वान

किया कि छात्र–छात्राएँ उनके विचारों और आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ। कार्यक्रम में डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. राकेश कुमार, प्रो. नीलम ढांडा, प्रो. जसबीर ढांडा, प्रो. रीटा, प्रो. कुसुम लता, डॉ. सलोनी पवन दिवान, मुख्य सुरक्षा अधिकारी डॉ. आनंद कुमार, कुटा प्रधान डॉ. जितेन्द्र खटकड़, प्रो. परमेश कुमार, डॉ. रामचन्द्र, डॉ. रमेश सिरोही, डॉ. हरविन्दर सिंह लोंगोंवाल, डॉ. वीर विकास, डॉ. हरविन्दर राणा, राजपाल सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, गैर–शिक्षक कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे और उन्होंने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए।

रिसर्च से जन–जागरूकता फैला रहा है कुवि का पर्यावरण अध्ययन विभाग

दिवाकर ,**विद्यार्थी**

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का पर्यावरण अध्ययन विभाग अपनी गतिविधियों को केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं रखता। अलग–अलग पर्यावरणीय चुनौतियों पर शोध करना और नए आयाम तलाशना विभाग का अहम हिस्सा है । दिलचस्प बात यह है कि इन शोधों से निकलने वाले निष्कर्ष अब आम लोगों के लिए पर्यावरणीय जागरूकता का बड़ा स्रोत बन रहे हैं। यह विभाग 2006 में स्थापित हुआ था । निदेशक डॉ. जितेंद्र शर्मा के नेतृत्व में छह शिक्षक और 26 शोधार्थी यहां सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। हर साल यहां से 10 से 15 विद्यार्थी यूजीसी–नेट और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद जैसी राष्ट्रीय परीक्षाओं में सफलता हासिल करते हैं। विभाग का मकसद है कि युवा न केवल शिक्षा प्राप्त करें बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए सार्थक योगदान भी दें।

पानी की गुणवत्ता पर शोध

हाल ही में डॉ. हरदीप शर्मा की

टीम ने कुरुक्षेत्र जिले के नौ निर्मल ग्रामों का अध्ययन किया। 81 भूजल नमूनों में से अधिकांश "अच्छी" से "उत्कृष्ट" श्रेणी में पाए गए। मानसून के बाद कुछ जगहों पर कठोरता, फ्लोराइड और टीडीएस बढ़ा, लेकिन खुले में शौच पर रोक से पानी में मलजनित प्रदूषण घटा। यह अध्ययन ग्रामीणों को साफ– सुथरे वातावरण और सुरक्षित पानी के महत्व का संदेश दे रहा है।

कचरे से प्रदूषण की चुनौती

अंबाला के पटवी लैंडफिल पर शिवानी सांगवान, अनजली मालन और हार्दिक राय शर्मा ने शोध किया। अध्ययन में पाया गया कि लैंडफिल से निकलने वाला लीचेट भूजल को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। पानी में क्लोराइड और टीडीएस खतरनाक स्तर पर मिले, साथ ही कैडमियम और लेड जैसी भारी धातुएं भी मौजूद थीं। प्रतिदिन 2,167 टन कचरा इस लैंडफिल में डाला जाता है। इस अध्ययन ने स्थानीय लोगों और प्रशासन को समस्या की गंभीरता समझने का अवसर दिया।

पराली जलाने पर रिसर्च

दीप्ति ग्रोवर, परदीप कौर और डॉ. हरदीप शर्मा ने मिर्जापुर गांव में पराली जलाने पर अध्ययन किया। रिपोर्ट के अनुसार 96: किसान इस प्रथा को अपनाते हैं। हालांकि 90: किसानों को वायु प्रदूषण की जानकारी है, लेकिन ग्रीनहाउस गैस और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव से वे अनजान हैं। इस शोध के जरिए किसानों में जागरूकता अभियान चलाने की दिशा तय की गई है।

अन्य शोध और योगदान

विभाग की ओर से अन्य शोध भी किए गए हैं। नितु यादव ने स्कूलों के पीने के पानी की जांच की। डॉ. पूजा अरोड़ा ने कार्बन अनुक्रम और जलवायु परिवर्तन पर काम किया। डॉ. संदीप गुप्ता ने जीआईएस और लिडार से वन स्वास्थ्य का अध्ययन किया। वहीं डॉ. भावना दहिया पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी और डॉ. मिनाक्षी सिहाग नैनोटेक्नोलॉजी पर शोध कर रही हैं। विभाग के प्रोफेसर भगवान सिंह और प्रोफेसर आरबीएस यादव ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। प्रो. यादव को पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने श्रेष्ठ युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया और उन्हें अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं पर काम करने का अवसर मिला।

भविष्य की दिशा

विभाग का फोकस अब जागरूकता अभियानों और टिकाऊ उपायों को बढ़ावा देने पर है। हैप्पी सीडर, कम्पोस्टिंग और जल संरक्षण जैसे प्रयासों को गांवों और समाज में लागू करने की कोशिश की जा रही है। विभाग का लक्ष्य है कि लोग सतत विकास लक्ष्यों, खासकर स्वच्छ जल के अधिकार, की ओर कदम बढ़ाएं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का यह विभाग शिक्षा, शोध और जागरूकताकृतीनों मोर्चों पर काम कर रहा है। यही कारण है कि यह विभाग अब एक आदर्श संस्थान बन गया है, जो अपने काम से समाज और पर्यावरण दोनों को नई दिशा दे रहा है।

केयू में विश्व ओजोन दिवस पर विद्यार्थियों ने दिखाई रचनात्मक प्रतिभा

ओजोन परत पृथ्वी का एक रक्षक कवच : प्रो. जितेंद्र शर्मा

कुवि। केयू के पर्यावरण अध्ययन संस्थान में 16 सितम्बर को विश्व ओजोन दिवस का आयोजन किया गया। "साइंस से ग्लोबल एक्शन तक" विषय के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने पोस्टर मेकिंग, भाषण और नाटिका प्रदर्शन जैसी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी रचनात्मकता और कौशल का प्रदर्शन किया। संस्थान के निदेशक प्रो. जितेंद्र शर्मा ने कहा कि ओजोन परत हमारी पृथ्वी के लिए एक रक्षक कवच की तरह है। उन्होंने कहा कि इसका संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी है। "यदि हम मिलकर प्रयास करें, तो इस अमूल्य परत को बचाया जा सकता है और भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सकता है।" उन्होंने बताया कि इस तरह के आयोजन छात्रों में वैज्ञानिक सोच और स्थायी विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक हैं।

कार्यक्रम में डॉ. पूजा अरोड़ा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और ओजोन परत के संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों का महत्व बताया। प्रतियोगिताओं में एमएससी फाइनल की महक ने प्रथम, रिंकी ने द्वितीय और चेष्टा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में ओजस्विनी प्रथम, शीतल द्वितीय और माही तृतीय रही। पोस्टर मेकिंग में डॉ. भावना दहिया ने आयोजन के सफल संचालन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

ओजोन परत की रक्षा सबकी जिम्मेदारी : प्रो. नीरा राघव

कुवि। केयू वनस्पति विज्ञान विभाग में आयोजित विश्व ओजोन दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. नीरा राघव ने कहा कि ओजोन परत सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती है। इसके क्षरण से त्वचा कैंसर, मोतियाबिंद, फसलों की हानि और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि इसका संरक्षण सभी की साझा जिम्मेदारी है। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश कुमार और अन्य शिक्षकों ने हर्बल गार्डन में पौधारोपण किया। प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने पोस्टर, स्लोगन, प्रश्नोत्तरी, स्किट और गुलदस्ता निर्माण में भाग लिया। गुलदस्ता प्रतियोगिता में अक्षिता ने प्रथम स्थान, नारा लेखन में शिखा, पोस्टर मेकिंग में रमन और प्रश्नोत्तरी में प्रियंका, विदुषी और अंजलि विजेता रहे।

पत्रकारिता की बारीकियों से रू–ब–रू हुए आईएमसीएमटी के विद्यार्थी

वरिष्ठ संपादकों ने कहा–एआई युग में भी मानवीय रचनात्मकता व विश्वसनीयता सर्वोपरि

कुवि। आईएमसीएमटी के विद्यार्थियों को 17 सितंबर को अमर उजाला के वरिष्ठ संपादकों से सीधे संवाद करने का अनूठा अवसर मिला। इस सत्र में विद्यार्थियों ने मीडिया इंडस्ट्री से जुड़े अपने सवाल वरिष्ठ पत्रकारों के सामने रखे और मीडिया की बदलती चुनौतियों, संभावनाओं और प्रिंट व डिजिटल मीडिया के महत्व को समझा। संस्थान निदेशक महासिंह पूनिया ने कहा कि ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं जब वरिष्ठ संपादक पर्याप्त समय निकालकर विद्यार्थियों को मीडिया की बारीकियों से अवगत कराते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे इस संवाद का पूरा लाभ उठाएँ और इसे अपने पेशेवर जीवन में लागू करें। अमर उजाला हरियाणा के संपादक विजय गुप्ता और करनाल

यूनिट के संपादक चंद्रमोहन ने संवाद में विद्यार्थियों को सरल और व्यावहारिक उदाहरणों के जरिए समझाया कि डिजिटल युग में भी प्रिंट मीडिया का महत्व कम नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि डिजिटल माध्यम तुरंत सूचना देते हैं, लेकिन गहराई से समझने और ठहराव भरी दृष्टि विकसित करने के लिए प्रिंट विद्यार्थियों की सूचना उपभोग का अहम हिस्सा है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रोशन मस्ताना ने किया। स्वागत एसोसिएट प्रो. डॉ. मधुदीप सिंह ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रोमा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संस्थान के शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों के सवाल और संपादकों के जवाब

सवाल: एआई के दौर में मानवीय रचनात्मकता का क्या होगा?

जवाब: विजय गुप्ता: तकनीक केवल सहायक है, लेकिन मानवीय रचनात्मकता का कोई विकल्प नहीं है। पत्रकारिता का मूल मानवीय सोच, संवेदनाओं और मौलिक विचारों पर आधारित है।

सवाल: मीडिया की विश्वसनीयता कैसे बनी रह सकती है?

जवाब: चंद्रमोहन: पाठकों का भरोसा बनाए रखना पत्रकारिता की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। निष्पक्ष, तथ्यपरक और संतुलित रिपोर्टिंग ही विश्वसनीयता की नींव है।

सवाल: डिजिटल युग में प्रिंट का महत्व क्या है?

जवाब: विजय गुप्ता और चंद्रमोहन: डिजिटल माध्यम तात्कालिक सूचना प्रदान करते हैं, लेकिन गहराई और ठहराव वाली समझ के लिए प्रिंट का स्थान अनिवार्य है।

स्वदेशी अपनाकर आत्मनिर्भर भारत बनाएं: कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा

कुवि। विश्वविद्यालय के एनएसएस सेल ने राष्ट्रीय सेवा योजना के 57वें स्थापना दिवस पर संगोष्ठी व सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर स्वयंसेवकों और कार्यक्रम अधिकारियों ने बैनरों के माध्यम से वर्ष 2024–25 की गतिविधियों का प्रदर्शन किया, जिसे मुख्य अतिथि ने सराहा।

अपने संबोधन में कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने विद्यार्थियों से समाज सेवा में सक्रिय भागीदारी करने का आह्वान किया। उन्होंने नशा मुक्ति अभियान चलाने, रक्तदान शिविर आयोजित करने और उद्यमिता को बढ़ावा देने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हर नागरिक को स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं को आत्मसात करने की अपील करते हुए कहा

कि सेवा भावना और अनुशासन के साथ युवा समाज और राष्ट्र को नई दिशा देने की अपार शक्ति हमेशा रहे हैं।

विशिष्ट अतिथि कुलसचिव लेफ्टिनेंट डॉ वीरेंद्र पाल ने कहा कि स्वयंसेवकों को "स्वयं से पहले आप" की भावना पर चलना चाहिए। उन्होंने बताया कि एनएसएस व्यक्तित्व और सामाजिक विकास का एक सशक्त मंच है जिसके माध्यम से विद्यार्थी न केवल समाज की सेवा करते हैं बल्कि अपने भीतर नेतृत्व और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित करते हैं । मुख्य वक्ता डॉ जितेन्द्र कुमार (राज्य पुरस्कार विजेता व पूर्व कार्यक्रम अधिकारी, सीआरएसयू, जींद) ने कहा कि ,यह संगठन केवल सेवा कार्यों तक सीमित नहीं है बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का माध्यम है। इसकी गतिविधियों में सामाजिक समरसता, संस्कार और नैतिक मूल्यों का समावेश होता है।

समारोह में विश्वविद्यालय स्तर पर "अवार्ड ऑफ रिकॉग्निशन" प्रदान किए गए। कार्यक्रम अधिकारियों की श्रेणी में डॉ. अनुराधा, डॉ. अनीता गोदारा, डॉ. मनदीप, डॉ. सिद्धांत, डॉ. अतुल शर्मा, डॉ. अनिल पांडे, डॉ. आभा चौधरी, डॉ. मोहित बिंदलिश, डॉ. राजबीर और डॉ. सोनिया रानी को सम्मानित किया गया। वहीं स्वयंसेवकों की श्रेणी में अंकित, अनमोल शर्मा, मुरारी कुमार, रोहन, सिमरन, गौरव परमार, हार्दिक, हिमानी, प्रदीप, संदीपो और सुशील को यह सम्मान मिला।

कार्यक्रम के दौरान स्वयंसेवकों ने कविता, गायन, नुक्कड़ नाटक और नृत्य प्रस्तुत किए। हरियाणवी और पंजाबी लोक नृत्य दर्शकों के आकर्षण का केंद्र रहे और उपस्थित जनसमूह ने तालियों से कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

समारोह का संचालन डॉ. निधि माथुर ने किया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आनंद कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत किया, उप–समन्वयक डॉ. नीरज बातिश ने ध न्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर डॉ. वीर विकास, डॉ. संदीप, डॉ. ज्योति, डॉ. राजरतन, डॉ. सतीश कुमार और डॉ. डिंपल भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में लगभग 450 स्वयंसेवकों और अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

गुरु तेग बहादुर का जीवन: त्याग और बलिदान की प्रेरणा: प्रो. सोमनाथ सचदेवा

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में गुरु तेग बहादुर साहिब की 350वीं शहीदी वर्षगांठ पर 26 सितंबर को एक दिवसीय विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य गुरु जी के त्याग, परोपकार और बलिदान की विरासत पर चर्चा करना और उन्हें युवा पीढ़ी के सामने जीवंत रूप में प्रस्तुत करना था। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कुलदीप सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि गुरु तेग बहादुर जी का जीवन समाज के लिए सर्वोच्च समर्पण का प्रतीक है। उन्होंने औरंगजेब के अत्याचारों से हिंदू समाज की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। कुलपति ने जोर देकर कहा "आज के युवा हमारी प्राचीन संस्कृति से दूर हो रहे हैं। युवाओं को गुरुओं की शिक्षाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए। गुरु बाणी हमें सुख–दुःख में समान रहने और मनुष्य को अपने कर्तव्यों के निर्वहन में सच्चा बने रहने की सीख देती है। यह कार्यक्रम छात्रों को अपनी संस्कृति से जोड़ने का एक माध्यम है।" कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने कहा कि गुरु तेग बहादुर ने

समाज में शांति, भाईचारा और मानवता का संदेश दिया। उन्होंने भाई मतिदास, भाई सतिदास और भाई दयाला जी की शहादत का उल्लेख करते हुए कहा कि गुरु जी की शहादत ने पूरे समाज को जागृत किया।

सरदार हरिंदर सिंह, सीनियर फेलो इनोवेशन डायरेक्टर, सिख रिसर्च इंस्टीट्यूट ने कहा कि गुरु तेग बहादुर साहिब की 350वीं शहादत वर्षगांठ न केवल सिख समुदाय के लिए, बल्कि पूरे भारत के लिए प्रेरणा का अवसर है। यह हमें याद दिलाती है कि आस्था, धार्मिक स्वतंत्रता और न्याय के लिए संघर्ष कभी विफल नहीं होते।

डॉ. जसवंत सिंह, निदेशक, गुरबानी रिसर्च ने गुरु जी की शिक्षाओं की सरलता और बहुआयामी दृष्टि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गुरु जी न केवल धर्म और काव्य के ज्ञाता थे, बल्कि संगीत, इतिहास, कला और परंपरा के भी पारंगत थे। उनके शब्द आज भी व्यक्तित्व निर्माण और नैतिक शिक्षा का मार्गदर्शन करते हैं। मुख्य वक्ता प्रो. अवतार सिंह, सीनियर रिसर्च फेलो (यूएसए) ने गुरु तेग बहादुर जी की शहादत पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनके पुत्र ने जीवन लिखते समय 'सीस दिया, पर सिर न दिया' वाक्यांश का प्रयोग किया। उन्होंने गुरु जी के पदों में उस समय के समाज, संस्कृति और राजनीति के गहरे संदेशों को छात्रों के सामने रखा और गुरमत शब्द के अर्थ से भी परिचित कराया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. गुरप्रीत सिंह ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल, प्रो. पुष्पा, प्रो. कृष्णा देवी, डॉ. कुलदीप सिंह, प्रो. महाबीर रंगा, डॉ. आनंद कुमार, डॉ. अजायब सिंह, डॉ. सुरजीत सिंह, डॉ. ज गमोहन सिंह, डॉ. नीरज बातिश, कनाडा से सुंदरपाल, डॉ. करमदीप, अमृतपाल, डॉ. देवेन्द्र बीबीपुरिया, विक्रमजीत सिंह सहित शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी मौजूद रहे।

पुस्तकालय भ्रमण: जब किताबें करने लगीं संवाद पन्नों में छुपा खजाना, जो इंटरनेट न दे सका

आईएमसीएमटी की छात्रा मनीषा ने विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी से लौटकर यह फीचर स्टोरी कलमबद्ध की।

कुवि। आज जब इंटरनेट और तकनीक हमारी जिंदगी पर हावी होते जा रहे हैं, तो कभी–कभी लगता है कि किताबों की जरूरत शायद अब नहीं रह गई। परंतु कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पुस्तकालय भ्रमण ने इस भ्रम को तोड़ दिया। इस यात्रा ने यह एहसास दिलाया कि किताबें आज भी जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, और आने वाली पीढ़ियों तक रहेंगी। पुस्तकालय में प्रवेश करते ही ऐसा लगा मानो किताबें मुझे अपनी ओर बुला रही हों। व्यवस्थित रूप से सजी अलमारियाँ, हर विषय के लिए निर्धारित स्थान और किताबों की आकर्षक प्रस्तुति ने मन मोह लिया। साहित्य की किताबों के पास पहुँची तो लगा वे कह रही हों, "आओ, हम तुम्हें किसी महान साहित्यकार की रचना से मिलवाते हैं।" विज्ञान की किताबें जैसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का महत्व समझा रही थीं, इतिहास की किताबें गौरवशाली अतीत से रूबरू करवा रही थीं, और राजनीति व अर्थशास्त्र की किताबें वर्तमान और भविष्य के रास्ते दिखा रही थीं। हर किताब अपनी कहानी कह रही थी। उनके पन्नों का पीलापन पाठकों के प्रेम और उपयोग का साक्षी बन रहा था। सबसे विशेष अनुभव तब हुआ जब हमें पांडुलिपियों और प्राचीन ग्रंथों को देखने का अवसर मिला। ये दस्तावेज न केवल साहित्य और संस्कृति के इतिहास को संजोए हुए थे, बल्कि उनकी लिखावट और चित्रकारी भी अद्भुत आकर्षण से भरी थी। पुस्तकालयाध्यक्ष ने विस्तार से बताया कि कैसे इन ध ारोहरों को बरसात, आंधी और सूक्ष्म जीवों से बचाने के लिए विशेष प्रयास किए जाते हैं। यह सुनकर स्पष्ट हुआ कि पांडुलिपियों का संरक्षण केवल एक तकनीकी कार्य नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है। जैसा कि कहा गया है– "किताबों को जलाने से भी बड़ा अपराध है उन्हें न पढ़ना।" किताबें हमें सिर्फ ज्ञान नहीं देतीं, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाती हैं। वे मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि हमारी उत्पत्ति, इतिहास और भविष्य से हमें जोड़ने वाली डोर हैं। यह अनुभव बताता है कि डिजिटल युग में भी किताबों का महत्व कम नहीं हुआ है। इंटरनेट क्षणिक सूचना दे सकता है, पर किताबें वह गहराई और अपनापन देती हैं, जिसे कोई अन्य माध्यम नहीं दे सकता। आईएमसीएमटी की छात्रा मनीषा का यह अनुभव इस बात का प्रमाण है कि विश्वविद्यालय का पुस्तकालय सिर्फ अध्ययन का केंद्र नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और जीवन मूल्यों का खजाना है।

स्वदेशी संकल्प यात्रा का उद्देश्य देश को आर्थिक रूप से मजबूत करना: प्रो. सोमनाथ सचदेवा

कुवि। स्वदेशी जागरण मंच द्वारा आयोजित पांच दिवसीय स्वदेशी संकल्प यात्रा का शुभारंभ माता भद्रकाली मंदिर से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने 19 सितंबर को तिरंगा फहराकर किया। इस अवसर पर सामाजिक, धार्मिक और व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने यात्रा को शुभकामनाएं दीं।

कुलपति प्रो. सोमनाथ ने कहा कि स्वदेशी ही टैरिफ टेररिज़्म से निपटने का सबसे बड़ा हथियार है। पोखरण परमाणु परीक्षण और कोविड–19 वैक्सीन निर्माण के उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता से ही भारत आर्थिक शक्ति बनेगा।

भाजपा अध्यक्ष तेजेन्द्र गोल्डी ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों ने बलिदान देकर देश को आजाद कराया और अब विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी अपनाना ही सच्ची आजादी होगी। प्रेरणा संस्थापक जयभगवान सिंगला ने कहा कि स्वदेशी से आत्मसम्मान और राष्ट्रशक्ति का विकास होता है।

यात्रा संयोजक डॉ. अजय जांगड़ा ने बताया कि यह यात्रा पांच दिनों तक कुरुक्षेत्र जिले की चार विधानसभा क्षेत्रों में भ्रमण कर नागरिकों को स्वदेशी अपनाने का आह्वान करेगी। मार्ग में विभिन्न समाज सभाओं और संगठनों ने उत्साहपूर्वक स्वागत कर स्वदेशी का संकल्प लिया।

Fresh Thoughts by the Freshers

New Faces, New Dreams: Freshers Share Their Hopes at KU

RAJAT / HIMANSHU
STUDENT

The month of August always brings a fresh wave of energy to Kurukshetra University as new students step into the campus with dreams in their eyes and hope in their hearts. This year too, the corridors of KU are echoing with youthful aspirations. Interestingly, while every student carries a unique vision for the future, one thread binds them all together—their trust in Kurukshetra University as the right place to shape those dreams. For many, KU's reputation and accessibility are the biggest draws. For some, it is the legacy of strong teaching and practical exposure. And for others, it is simply the confidence that this campus is the right launchpad for their ambitions. Mayank Bansal, who joined the MBA program says - My vision is to either work in an MNC or build my own startup and expand my family business," he shares. His words reflect how KU allows students to focus on their goals without financial burden. From Sonipat, Kartik brings a different story. Having worked in the NCR for two years, he wanted to relive the thrill of campus life while also upgrading his skills. Some students arrive with a clarity of purpose. Anshpreet Kaur, pursuing BALLB at the Institute of Law, has been determined since Class 11 to join the judiciary. "My focus is on advocacy, and I also want to prepare for competitive exams in the judicial field. Moreover, I am enjoying my campus life too as it gives me motivation every day," she says. For **Mohith,** who joined Multimedia, KU stood out for its strong practical exposure. "I chose KUK because of its positive reviews from alumni. My goal is to master graphic designing and establish my own creative design company," he adds. His words show the influence of KU's alumni network and its reputation for hands-on learning. Equally passionate is Vivek Mehta**,** an M.Sc. Geology student. Drawn by his fascination for Earth sciences, he found KU to be the right fit. "Geology always fascinated me, and KUK provides excellent fieldwork opportunities along with experienced teachers. I see myself working in environmental conservation and geological surveys in the future," he says. Together, these voices paint a vibrant picture of the KU campus—where personal dreams meet institutional support. Each student comes with a story, but all share the same belief that Kurukshetra University is the platform where aspirations turn into achievements.

From Hindi to Political Science, English to Science:

Students Celebrate Hindi with Patriotic Zeal

MANSI
STUDENT

KU Campus. –

The Senate hall of Kurukshetra University buzzed with rhythm, rhyme, and patriotic fervor as students from every corner of the campus—be it Hindi, Political Science, English, Science, or Engineering—took center stage to celebrate Hindi Day. What began as a routine observance transformed into a festival of voices, ideas, and emotions, proving that love for the mother tongue knows no departmental boundaries.

The heart of the celebration was a state-level Hindi poetry recitation competition on the theme of patriotism, which drew an extraordinary response from students. With 110 participants from various departments and affiliated colleges, the turnout far exceeded expectations. So overwhelming was the enthusiasm that organizers had to divide the contest into two separate divisions, even relocating one division to a new venue to accommodate the eager participants.

Though rules allowed only four participants per department, the patriotic zeal of students knew no limits. Several departments sent more participants than permitted. Particularly noteworthy was the participation of students from non-Hindi disciplines, who crossed language barriers with pride to honor their mother tongue. This gesture of inclusivity and respect was widely appreciated.Students from Science, Mathematics, Social Sciences, Political Science, English, and Engineering brought equal passion to the stage. Their poems—ranging from recitations of renowned poets to original compositions—overflowed with love for the nation, respect for heritage, and reflections on India's future. The Senate Hall and adjoining venues were filled with an air of fervent pride and admiration. In concluding remarks, organizers expressed delight at the remarkable turnout and high-quality entries. "The overwhelming response shows that Hindi continues to thrive in the hearts of young people, cutting across academic and linguistic boundaries," they noted. Winners received mementos and certificates, while all participants were lauded for keeping the spirit of Hindi alive.

Pages of Time: IMCMT Students Explore KU's Heritage Collection

HARSH
STUDENT

KU Campus. –

As part of Kurukshetra University's annual library orientation, students of the Institute of Mass Communication and Media Technology (IMCMT) explored not only books and digital resources but also the rare Manuscript Section housed in Ranganath Bhawan. Guided by Prof. Lalit Gaud and coordinator Meera Sharma, the students discovered manuscripts dating back over 1,300 years, written in Sanskrit, Hindi, Prakrit, and Persian. Preserved through a blend of traditional and modern techniques, these treasures left the visitors deeply moved—especially the holy Geeta manuscript, insured for more than 2 crore and once showcased in Germany. First-semester students Taresm, Savi Sharma, and Shivika described the visit as unforgettable. Taresm said it felt like "walking into history," while Savi marveled at a 40-meter astrological text and Shivika stressed how heritage connects society to its roots.With over 16,000 manuscripts digitized for global access, students appreciated how the university merges ancient wisdom with modern technology. They concluded that manuscripts are not just relics of the past but living testimonies of India's culture and a responsibility for the future. For budding media professionals, the lesson was clear—rootedness in history and culture is essential to communicate meaningfully in today's world.

'ग' से गजल, 'ग' से गणित" : प्रो. विनोद कुमार : गणितज्ञ और गजलकार

सिमरन / तेजवीर ,विद्यार्थी

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के गणित विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार का जीवन दो "ग" से आकार लेता है – **गणित और गजल**। घर का हर सदस्य गणित से जुड़ा है पत्नी गणित अध्यापिका, बेटा अमेरिका की प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर। पर इस गणितीय परिवेश में भी वे हिंदी जगत में "कुमार विनोद" नाम से गजलकार और व्यंग्यकार के रूप में पहचाने जाते हैं। वे कहते हैं –**"जटिल से जटिल बात को अगर विनोद में कह दिया जाए तो वह सरल हो जाती है।"** यही उनकी पहचान है।

गणित और गजल–ये दो अलग–अलग दुनिया आपके जीवन में साथ कैसे आ गईं?

यह कुछ ऐसा है जिसे तर्क से नहीं समझाया जा सकता। बचपन में ही दोनों मेरे भीतर आ बैठे–एक तरफ गणित का ठोस तर्क, दूसरी तरफ गजल की संवेदनशीलता। गणित ने मुझे सिखाया कि दो और दो चार होते हैं, इसमें बहस की गुंजाइश नहीं। वही आदत गजल और व्यंग्य में आई–बात इतनी पुख्ता हो कि काटी न जा सके। दूसरी ओर, गजल और कविता ने मेरी क्रिएटिविटी को निखारा, जिसने गणित पढ़ाने और समझाने के काम को और रोचक बना दिया।

हिंदी साहित्य की ओर झुकाव कब से रहा?

बाल्यकाल से। किताबें पढ़ने का गहरा शौक था। सातवीं–आठवीं कक्षा में कविताएँ लिखनी शुरू कर दीं। धीरे–धीरे समझ आया कि शब्द भी उतने ही ताकतवर हैं जितने गणित के अंक। गणित ने मुझे सोच की स्पष्टता दी और साहित्य ने भावनाओं की गहराई।

क्या आपको लगता है कि आज की पीढ़ी का हिंदी से लगाव कम है?

मैं पीढ़ियों की सीधी तुलना नहीं करना चाहूँगा। लेकिन एक सच्चाई है–असली अभिव्यक्ति हमेशा मातृभाषा में ही संभव होती है। मातृभाषा से नाता नाभि–नाल जैसा होता है। चाहे कोई कितनी भी भाषाएँ सीख ले, मातृभाषा का स्थान कोई नहीं ले सकती। दुनिया भर में लोग अपनी भाषा को प्राथमिकता देते हैं। हमारे युवाओं को भी इसे समझना चाहिए।

सोशल मीडिया के इस दौर में साहित्य की प्रासंगिकता को कैसे देखते हैं?

हाँ, रुचियाँ बदली हैं। देखने–सुनने के माध्यम बढ़े हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि साहित्य की जरूरत कम हो गई। साहित्य हमेशा इंसान को संवेदनशील और परिपक्व बनाता है। यह जीवन के सुख–दुःख की गहरी समझ देता है। बिना साहित्य के इंसान का 'मनुष्यत्व' अधूरा रह जाता है।

आपके व्यंग्य लेखन की शुरुआत कब हुई?

विद्यार्थी जीवन से ही। लेकिन विश्वविद्यालय में अध्यापन शुरू करने के बाद यह धार और पैनी होती गई। व्यंग्य मेरे लिए सिर्फ हँसी–मजाक नहीं, बल्कि समाज की विसंगतियों को आईना दिखाने का जरिया है।

एक अच्छा व्यंग्य कैसे लिखा जाता है?

व्यंग्य लिखा नहीं जाता, भीतर से फूटता है। जब समाज की गलतियों और विसंगतियों को गहराई से महसूस करते हैं, तो व्यंग्य अपने आप उभरता है। और हाँ, कम शब्दों में प्रभावी ढंग से लिखने की आदत मुझे गणित से मिली। गणित अंकों पर आधारित विषय है। इसमें शब्दों का प्रयोग बहुत कम होता है और जो होता है, वह अत्यंत संक्षिप्त। गणित से मिली यही संक्षिप्तता और सटीकता गजल लेखन में मेरे लिए अत्यंत उपयोगी रही।

गजल आपके दिल के सबसे करीब क्यों है?

प्रो. विनोद कुमार

गजल की अपनी अलग खूबसूरती है। हर शेर अपने आप में स्वतंत्र इकाई होता है, फिर भी पूरी गजल में एक लय और संगीतात्मकता रहती है। आप एक गजल में छह–सात अलग संदर्भ छू सकते हैं, और फिर भी सब एक सूत्र में बँधे रहते हैं। इसकी गेयता इसे और भी मोहक बना देती है।

युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

तकनीक का जमाना है, उसका भरपूर प्रयोग करें। लेकिन ध्यान रखें तकनीक आपकी रचनात्मकता पर हावी न हो। खूब पढ़ें, अलग–अलग विषय पढ़ें और भाषा को लगातार निखारत रहें। यही आदत उनके जीवन में गुणवत्ता और गहराई लाएगी।

अंत में, अपनी रचनाओं में से कुछ प्यारी सी पंक्तियाँ सुना दीजिए।

लेखक के लिए तो हर रचना समभाव से प्रिय होती है। पर खैर, अपनी एक रचना से कुछ पंक्तियाँ सुनाता हू–

"सूरज को कहां दरकार छुट्टी की,
नदी को कहाँ फुर्सत, वो तो संडे को भी बहती है।"

प्रतिक्रियाः वाह सर, बहुत खूब! आपका अंदाज–ए–बयां ही कुछ खास है। आपने गणित और गजल, तर्क और कल्पना–दोनों को एक साथ बुनते हुए पाठकों को नई दृष्टि दी। इस आत्मीय और रोचक बातचीत के लिए हार्दिक धन्यवाद।

समापनः आपकी बातें न केवल प्रेरणा देती हैं बल्कि यह भी सिखाती हैं कि सृजन का प्रवाह सूरज और नदी की तरह निरंतर होता है

आईएमसीएमटी में सिनेमा दिवसः फिल्म निर्माण के गुर सीखते हुए छात्र, सवालों की झड़ी

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के मीडिया प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार संस्थान (आईएमसीएमटी) में सिनेमा दिवस के अवसर पर फिल्म निर्माण पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें टीवी और फिल्म निर्माण की विभिन्न विधाओं में व्यापक अनुभव रखने वाले विकास गौड़ ने विद्यार्थियों को फिल्म बनाने की पूरी प्रक्रिया से अवगत कराया।

उन्होंने फिल्म का आइडिया विकसित करने, उस पर स्क्रिप्ट लिखने और शूटिंग की बारीकियों पर विस्तार से चर्चा की। विकास गौड़ ने कहा कि फिल्म निर्माण का अच्छा विषय वही चुन सकता है, जो समाज को गहराई से देखने और समझने की संवेदनशील दृष्टि रखता हो। विषय चयन की मजबूती समाज को देखने की अनुभूति पर निर्भर करती है। कार्यशाला में उनके सहयोगी आर्ट डायरेक्टर विनोद कोहली ने फिल्म सेट डिजाइन और आर्ट डायरेक्शन की अहमियत पर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया। उन्होंने डेमो देकर बताया कि किस तरह रंग–संयोजन और सेट की सजावट फिल्म के दृश्यों को जीवंत बना देती है। इस दौरान विद्यार्थियों ने भी उत्सुकतापूर्वक कई सवाल पूछे। मसलनकृअभिनेता कैसे बना जाए? स्क्रिप्ट लेखन को और बेहतर कैसे किया जाए? जैसे प्रश्नों ने कार्यशाला को और भी संवादात्मक और रोचक बना दिया। विशेषज्ञों ने धैर्यपूर्वक सभी प्रश्नों के व्यावहारिक उत्तर दिए। संस्थान निदेशक प्रो. महा सिंह पूनिया ने कहा कि इतने अनुभवी लोगों का सीधे विद्यार्थियों से संवाद करना बेहद दुर्लभ अवसर है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे इस मौके का पूरा लाभ उठाएँ। इस अवसर पर संस्थान के शिक्षक डॉ. मधुदीप सिंह, डॉ. तपेश किरण, कंवर दीप, सतीश राणा, डॉ. प्रदीप राय, अमित जांगड़ा, सचिन वर्मा और प्रीति शर्मा भी मौजूद रहे।

सिख म्यूजियम समिति के सदस्य बने केयू कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल

कुवि। हरियाणा के राज्यपाल एवं कुवि के कुलाधिपति प्रो. असीम कुमार घोष ने राज्य में प्रस्तावित सिख म्यूजियम की सामग्री के ऐतिहासिक सत्यापन, विकास और अनुमोदन के उद्देश्य से एक उप–समिति का गठन किया है। इस समिति में कुवि के कुलसचिव एवं इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटेड एंड होनर्स स्टडीज (आईआईएचएस) के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वीरेन्द्र पाल को सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है। समिति म्यूजियम से संबंधित सभी सामग्री का वैज्ञानिक और ऐतिहासिक परीक्षण कर उसे प्रमाणिक स्वरूप प्रदान करेगी। इस संदर्भ में आदेश हरियाणा सरकार के सूचना, जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग के सचिव श्री के. मकरंद पांडुरंग, आईएएस द्वारा जारी किए गए हैं। डॉ. वीरेन्द्र पाल की नियुक्ति को विश्वविद्यालय समुदाय ने गर्व की उपलब्धि बताया है।

डॉ. वीरेन्द्र पाल

डॉ. प्रीतम सिंह बने गुरु रविदास म्यूजियम समिति के सदस्य

डॉ. प्रीतम सिंह

कुवि। हरियाणा के राज्यपाल एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. असीम कुमार घोष द्वारा राज्य में प्रस्तावित गुरु रविदास म्यूजियम की सामग्री का ऐतिहासिक सत्यापन, मूल्यांकन, विकास एवं अनुमोदन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उप–समिति का गठन किया गया है। इस महत्वपूर्ण समिति में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय स्थित डॉ. भीमराव अंबेडकर अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. प्रीतम सिंह को सदस्य के रूप में नामित किया गया है। इस नियुक्ति से विश्वविद्यालय परिवार में हर्ष का वातावरण है और यह उम्मीद जताई जा रही है कि उनकी विशेषज्ञता समिति के कार्यों में सार्थक योगदान देगी। इस संबंध में आदेश श्री के. मकरंद पांडुरंग, आईएएस, सचिव, सूचना, जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हरियाणा द्वारा जारी किए गए हैं।

भारतीय जीवनशैली परंपराओं और मूल्यों पर आधारितः डॉ. वीरेन्द्र पाल

कुवि। कुवि के भारत रत्न श्री गुलजारी लाल नंदा नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र केंद्र एवं प्राच्य विद्या संकाय के संयुक्त तत्वावधान में 8 सितंबर को "आधुनिक युग में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता" विषय पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने कहा कि भारतीय जीवनशैली परंपराओं और पीढ़ियों से चले आ रहे मूल्यों में गहराई से निहित है। उन्होंने कहा कि चाहे हमारे रंग–बिरंगे त्यौहार हों, पारंपरिक परिधान हों या फिर भारतीय पाक–कला के विशिष्ट व्यंजन, जीवन का प्रत्येक पहलू इस भूमि की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को अभिव्यक्त करता है। डॉ. पाल ने जोर दिया कि इन मूल्यों को आधुनिक शिक्षा और जीवनशैली के साथ जोड़कर युवाओं को दिशा देने की आवश्यकता है ताकि वे

वैश्वीकरण के दौर में भी अपनी जड़ों से जुड़े रह सकें। मुख्य वक्ता गीता शोध केन्द्र के प्रभारी प्रो. आर.के. देशवाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने विद्यार्थियों की मनोस्थिति को भारतीय परंपराओं के अनुरूप ढालने की आवश्यकता पर बल दिया और इसके व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. शुचिस्मिता ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सह–संयोजिका एवं प्राच्य विद्या संकाय की अधिष्ठाता प्रो. कृष्णा रंगा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि ऐसे संवाद न केवल विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को विस्तृत करते हैं बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण का माध्यम भी बनते हैं। अंत में प्रो. रंगा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. गुरचरण सिंह, डॉ. भगत सिंह, डॉ. रामचंद्र, डॉ. कुलदीप आर्य सहित विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी और लगभग 200 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

नशा व्यक्ति की प्रतिभा और ऊर्जा को नष्ट करता हैः प्रो. ए.आर. चौधरी

कुवि। कुवि में एनएसएस यूटीडी यूनिट–3 एवं यूथ सोशलग्राम फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार, 26 सितंबर, को 'मजबूत युवा, उज्ज्वल राष्ट्र – ड्रग्स को ना कहें, प्रेरणा के लिए हां' विषय पर एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया।मुख्य अतिथि छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. ए.आर. चौधरी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा,"नशा व्यक्ति की प्रतिभा और ऊर्जा को नष्ट करता है। हर युवा का कर्तव्य है कि वह जीवन सकारात्मक दिशा में लगाए।" मुख्य वक्ता सोनू कुमार (ड्रग डी–एडिक्शन सेंटर, एलएनजेपी सिविल अस्पताल) ने कहा कि नशा केवल शरीर और मन को ही नहीं, बल्कि परिवार और समाज की जड़ें भी कमजोर करता है। डॉ. निधि माथुर ने सेवा और अनुशासन को जीवन सफलता की कुंजी बताया। शिविर के अंत में सभी स्वयंसेवकों ने नशा मुक्त भारत के निर्माण का संकल्प लिया।

रत्नावली की तैयारियों की आभा

कुवि परिसर में महोत्सव को लेकर छात्रों और विभागों में उत्साह और जोश

कुवि। *vtu flg*

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का परिसर इन दिनों रत्नावली महोत्सव को लेकर उत्साह से सराबोर है, जहाँ छात्र–छात्राएँ बेसब्री से भागीदारी की तैयारी में जुटे हैं। हरियाण ा की लोकसंस्कृति और परंपराओं को दर्शाने वाला यह महोत्सव स्वादिष्ट व्यंजन, हस्तनिर्मित सजावट, लाइव प्रस्तुतियाँ, लोकनृत्य, संगीत और नाट्य प्रतियोगिताओं का अनूठा संगम प्रस्तुत करेगा। विद्यार्थी अपने–अपने स्टॉल बुक कर रहे हैं, जिनमें कुकिंग, क्राफ्टिंग और रचनात्मक प्रतिभा की झलक देखने को मिलेगीय एमए जेएमसी की छात्राएँ त्विशी और वंशिका ने भी कड़ी चावल और राजमा चावल का स्टॉल लगाने की तैयारी की है। एनएसएस

और सांस्कृतिक समितियाँ विशेष लोक प्रस्तुतियों को अंतिम रूप देने में व्यस्त हैं। आयोजकों और विद्यार्थियों की मेहनत से इस बार महोत्सव और भी आकर्षक और सफल होने की उम्मीद है।

समन्वयक डॉ. मीना शर्मा का मानना है कि छात्रों की ऊर्जा और भागीदारी ही इस महोत्सव को खास बनाती है। रंग–बिरंगे स्टॉल, मनमोहक प्रस्तुतियाँ और युवा जोश से सजी रत्नावली 2025 निश्चित ही पूरे परिसर को रचनात्मकता और उल्लास के रंगों से भर देगी। महोत्सव इस बार 28 से 31 अक्टूबर 2025 तक आयोजित किया जाएगा। इस दौरान कुल 32 विभिन्न विध ाओं की प्रस्तुतियाँ होंगी और 3,000 से अधिक कलाकारों की भागीदारी की उम्मीद है। कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि रत्नावली महोत्सव विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देता है और छात्रों को मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों और आयोजकों से अपील की कि वे इस महोत्सव को व्यवस्थित और आकर्षक बनाने में पूरी मेहनत करें। कुवि जनसंपर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया ने बताया कि इस बार विद्यार्थियों को रत्नावली के मेले में और अधिक स्टॉल लगाने का अवसर दिया जाएगा, ताकि वे अपनी रचनात्मकता और नवाचार को प्रदर्शित कर सकें। उन्होंने कहा कि यह महोत्सव केवल सांस्कृतिक आयोजन नहीं है, बल्कि छात्रों के बहुआयामी विकास और रचनात्मक कौशल को सामने लाने का बेहतरीन मंच है। संस्थान के निदेशक और विभागाध्यक्ष तैयारियों का निरीक्षण करते रहे। मंच प्रस्तुतियों, नाटिका, नृत्य, संगीत और कला प्रदर्शनों के साथ–साथ स्टॉलों और प्रतियोगिताओं की विशेष समीक्षा की गई।

महोत्सव में शामिल प्रमुख कार्यक्रम और प्रतियोगिताएँ

- सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँरू नाटिका, नृत्य, संगीत, भाषण और कविता पाठ
- कला और हस्तशिल्प प्रदर्शनीरू छात्रों के स्टॉल और क्रिएटिव प्रदर्शन
- शैक्षणिक और ज्ञानवर्धक कार्यक्रमरू क्विज, प्रश्नोत्तरी और नवाचार प्रदर्शनी

इंस्ट्रूमेंटेशन विभाग में दीक्षा आरम्भ समारोह

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के इंस्ट्रूमेंटेशन विभाग में 1 सितम्बर को दीक्षा आरम्भ समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि इंस्ट्रूमेंटेशन किसी भी आधुनिक उद्योग और अनुसंधान का अनिवार्य घटक है, क्योंकि यह मापन, नियंत्रण और स्वचालन के माध्यम से प्रक्रियाओं की सफलता सुनिश्चित करता है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल डिग्री और नौकरी का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास का माध्यम है। इसी दौरान उन्होंने विभाग का नाम इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग करने की

घोषणा भी की। छात्रों द्वारा विकसित सोलर ईवी कार का प्रदर्शन किया गया, जिसमें कुलपति प्रो. सचदेवा, मुख्य अतिथि हरियाणा विद्युत नियामक आयोग के सदस्य मुकेश कुमार गर्ग और विभागाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा ने यूसिक से नए भवन जे.सी. बोस तक सवारी की। कुलपति ने लिक्विड नाइट्रोजन प्लांट, जीसीएमएस लैब और इलेक्ट्रॉनिक वर्कशॉप जैसी सुविध ाओं का भी निरीक्षण किया। इस अवसर पर कार निर्माण और लिक्विड नाइट्रोजन प्लांट संचालन में योगदान देने वाले कर्मचारियों तथा छात्रों को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि मुकेश कुमार गर्ग ने कहा कि ऊर्जा आधुनिक भारत की रीढ़ है और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में इसकी निर्णायक भूमिका होगी। विभागाध्यक्ष प्रो. अवनीश वर्मा ने इंजीनियरिंग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विद्युत ऊर्जा की अवधारणा वैदिक काल से मिलती है और भारत का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज 1847 में रुड़की में स्थापित हुआ।

मंच संचालन प्रो. दिनेश राणा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुरेन्द्र सिंह ने दिया। समारोह में प्रो. प्रदीप कुमार, प्रो. सुनील ढींगरा, प्रो. वी.एम. मूर्ति, प्रो. जयपाल सरोहा, डॉ. गगनदीप सिंह गिल सहित शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विवाद निपटारे में में सुलह की प्रक्रिया अपनाएँः अधिवक्ता मेहुल बंसल

कुवि। विधि संस्थान में न्यायालय से पूर्व विवादों के समाधान पर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वैकल्पिक विवाद समाधान (एडीआर) की जानकारी देना था। कार्यक्रम शुक्रवार, 26 सितंबर, को संपन्न हुआ।मुख्य अतिथि अधि ावक्ता मेहुल बंसल ने कहा विवादों को अदालत तक ले जाने से पहले संवाद और सुलह अपनाएं। यह समय, धन और रिश्तों की रक्षा करता है। निदेशक प्रो. सुशीला देवी चौहान ने वैकल्पिक विवाद समाधान को न्याय तक पहुंच को सरल और समाज में सौहार्द बढ़ाने वाला बताया। सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता सौरंजन एस. रॉय ने कहा कि एडीआर व्यवस्था न्याय को तेज, सरल और जनसुलभ बनाती है। मंच संचालन छात्र अध्यक्ष अंशप्रीत कौर ने किया।

अनुसंधान और नवाचार सतत विकास का आधारः प्रो. एस. के. यादव

कुवि। पंडित मदन मोहन मालवीय अध्यापक प्रशिक्षण केंद्र द्वारा आयोजित 30वें ऑनलाइन राष्ट्रीय शिक्षा नीति संवेदीकरण व अभिमुखता कार्यक्रम के सातवें दिन "अनुसंधान एवं नवाचार" पर चर्चा हुई। कार्यक्रम शुक्रवार, 26 सितंबर, को संपन्न हुआ। प्रो. एस. के. यादव (एनसीईआरटी, नई दिल्ली) ने कहा अनुसंध ान और नवाचार ही शैक्षणिक उत्कृष्टता, सामाजिक परिवर्तन और सतत विकास का आधार हैं।दूसरे सत्र में डॉ. अभिषेक कुमार सिंह (दिल्ली विश्वविद्यालय) ने एनईपी 2020 के दृष्टिकोण में अनुसंधान को शिक्षा और समाज निर्माण का केंद्र बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रियंका चौधरी ने किया और निदेशक प्रो. प्रीति जैन को मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रतिभागियों ने व्याख्यानों को प्रेरणादायी और उपयोगी बताया।

किताबों का दान महादान : प्रो. सुनील ढींगरा

कुवि।कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के यूआईईटी संस्थान में 2 सितम्बर को विकास गहलोत ने तकनीकी शिक्षा से सम्बंधित लगभग चार दर्जन निजी पुस्तकें दान कीं। इस अवसर पर निदेशक प्रो. सुनील ढींगरा ने कहा कि किताबों का दान महादान है। कई विद्यार्थी सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण
किताबें नहीं खरीद पाते, ऐसे में यह संग्रह उनके लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।उन्होंने इसे परोपकार और पुण्य का कार्य बताते हुए कहा कि किसी की निरूस्वार्थ सहायता करना मंदिर में पूजा करने के समान है। विकास गहलोत ने कहा कि उनके घर में पड़ी ये किताबें संस्थान में विद्यार्थियों के वास्तविक उपयोग में आएंगी। डॉ. राजेश अग्निहोत्री ने आश्वस्त किया कि इन पुस्तकों का सदुपयोग कर जरूरतमंद विद्यार्थियों की निरंतर सहायता की जाएगी। डॉ. उपेंद्र ढुल ने दान की सराहना करते हुए इसे संस्थान से गहलोत के पुराने संबंधों का प्रतीक बताया।

कैंपस डायरी

आईआईएचएस में चलाया सफाई अभियान, पौधों को किया व्यवस्थित

कुवि। कुरुक्षेत्र, 27 सितंबर। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के आईआईएचएस प्रांगण में प्राचार्या प्रोफेसर रीटा की अगुवाई में शनिवार को सफाई अभियान चलाया गया तथा पौधों को व्यवस्थित करने का कार्य किया गया। संस्थान की प्राचार्या प्रो. रीटा ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि स्वच्छ और हरा–भरा परिसर शिक्षा के अनुकूल वातावरण तैयार करता है। उन्होंने विद्यार्थियों को ऐसे अभियानों में नियमित भाग लेने के लिए प्रेरित किया। अभियान के तहत न केवल संस्थान की साफ–सफाई की गई बल्कि पौधों को भी व्यवस्थित ढंग से सजाया गया। विद्यार्थियों ने पौधों की छंटाई कर उन्हें सुंदर रूप दिया और परिसर को हरा भरा बनाए रखने का संकल्प लिया। इस अवसर पर डॉ. सुभाष जड़ौला, मंगेश शर्मा, सुमित, सुधीर सहित विद्यार्थियों ने भी सहयोग किया।

बच्चों को सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की दें प्रेरणाः प्रो. सुशीला चौहान

कुवि।कुवि परिसर। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के विधि संस्थान द्वारा 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के उपलक्ष्य में गाँव मथाना में किशोर न्याय अधिनियम 2015 विषय पर कानूनी जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। शिविर का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों और युवाओं से जुड़े कानूनों के बारे में जागरूकता फैलाना तथा सामाजिक बुराइयों से दूर रहने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम के दौरान विधि संस्थान के विद्यार्थियों ने ग्रामीणों के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर उनके सवालों के जवाब दिए। विद्यार्थियों ने वक्तव्य, लघु नाटक और कविता के माध्यम से न केवल किशोर न्याय अधिनियम की जानकारी दी बल्कि समाज में व्याप्त बाल श्रम, नशे की

यूआईईटी संस्थान के दो एनसीसी कैडेट्स का भारतीय रक्षा सेना में चयन

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के यूआईईटी संस्थान के एनसीसी कैडेट अक्षय वत्स और कैडेट वरुण शर्मा का भारतीय रक्षा सेना में चयन हुआ है। इस उपलब्धि पर 2 सितम्बर को कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा, कुलसचिव लेफ्टिनेंट डॉ. वीरेंद्र पाल, संस्थान निदेशक प्रो. सुनील ढींगरा व 10 हरियाणा बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल हरप्रीत सिंह ने दोनों कैडेट्स को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एनसीसी इंचार्ज लेफ्टिनेंट डॉ. अजय जांगड़ा ने बताया कि कैडेट अक्षय वत्स (कंप्यूटर इंजीनियरिंग) ने यूपीएससी की कंबाइंड डिफेंस सर्विसेज एंट्री (सीडीएसई) और शॉर्ट सर्विस कमीशन आर्मी (टेक्नोलॉजी) दोनों परीक्षाएं पास की हैं। अब वे 18 महीने की ट्रेनिंग के बाद इंडियन मिलिट्री अकादमी, देहरादून में लेफ्टिनेंट बनेंगे। इलेक्ट्रॉनिक एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग के छात्र कैडेट वरुण शर्मा ने भी एसएससी आर्मी टेक्निकल और नेवी पास किया है और भारतीय सेना में सेवा देने का निर्णय लिया है।

इस अवसर पर संस्थान के शिक्षक, गैर–शिक्षक और एनसीसी कैडेट्स सहित डॉ. पूनम डबास, डॉ. प्रियंका जांगड़ा, डॉ. सुनील नैन, डॉ. राजेश दहिया आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा को अधिक समावेशी बनाने का सार्थक प्रयासः प्रो. सनीम फातिमा

कुवि। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में यूजीसी–मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र द्वारा 2 सितम्बर को विद्यार्थी विविधता और समावेशी शिक्षा विषय पर 29वां ऑनलाइन एनईपी–2020 उन्मुखीकरण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद की प्रो. सनीम फातिमा ने एनईपी 2020 की रूपरेखा में विद्यार्थी विविधता के महत्व को विस्तारपूर्वक समझाते हुए कहा कि यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी और विद्यार्थियों की विविध ाता के प्रति उत्तरदायी बनाने का सार्थक प्रयास करती है, जिससे विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों को समान अवसर मिल सकें।

दूसरे सत्र में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के डॉ. बुध सिंह ने बताया कि एनईपी 2020 विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने और शिक्षा को सामाजिक समानता का सशक्त माध्यम बनाने की दिशा में परिवर्तनकारी कदम उठा रही है। कार्यक्रम का संचालन कोर्स समन्वयक डॉ. सुमन बाला ने किया और निदेशक प्रो. प्रीति जैन को विशेष आभार प्रकट किया।

कुवि द्वारा आरंभ किए जा रहे बीए गीता और पीजी डिप्लोमा भागवत गीता अध्ययन कोर्स का पोस्टर
का विमोचन करते गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद और साथ में कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा, अन्य अधिकारी व शिक्षक

fo|kfFk;ksa ls :&c&: gksus igqps vej mtyk] gfj;k.kk ds lkaln fot; xqIrk dk vfHkuanu djrs dqyifr izks lkseukFk lpnsok] dqylfpo MkW ohjsanz iky o lkFk esa tulaidZ foHkkx funs’kd izks egkflag iwfu;k

bLVhP;wV vkWQ VhPkj Vªsfuax ,.M fjlpZ dh lgk;d izkQslj MkW eerk pkoyk dh iqLrd dk foekspu djrs dqyifr izks lkseukFk lpnsok o lkFk esa dqylfpo MkW ohjsanz iky] tulaidZ funs’kd izks egkflag iwfu;k o vU; f’k{kd

flrEcj ekg esa lsokfuo`Ùk gq, ft;kfQftDl foHkkx ds lhfu;j çksQslj fnus’k dqekj o ;fuo- flVh Ldwy v,Q euStesV ds lhfu;j çksQslj lq’khy ‘kekZ ds fonkbZ lekjksg esa dqyifr izks lkseukFk lpnsok o vU; inkf/kdkjhA

njLFk ,oa v,uykbu f’k{kk dsæ ¼lhMhvkbZ½ ds v,uykbu dk;Øeksa esa ukekafdr f’k{kkfFk;ksa ds ykHkk- FkZ gsrq ds;wds yuZj ekckby ,i dk y,Up djrs dqyifr

कुवि के पांडुलिपी विभाग में भ्रमण को पहुंचे आईएमसीएमटी के विद्यार्थियों
को व्याख्यान देते विभाग संयोजक प्रो ललित गौड

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में गुरुवार को केयू यूथ रेड क्रॉस यूटीडी यूनिट द्वारा सीनेट हॉल में एक दिवसीय बेसिक फर्स्ट एड और डिजास्टर मैनेजमेंट ट्रेनिंग का आयोजन किया गया

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कुवि में आयोजित राज्यस्तरीय कविता पाठ प्रतियोगिता के समापन पर विद्यार्थियों को कविता की महिमा बताते कुवि के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ दिनेश दधिचि

भूजल सर्वेक्षण के दौरान गांवों में केयू भूभौतिकी विभाग के विद्यार्थियों को दी भूजल अन्वेषण प्रक्रिया की जानकारी देते विशेषज्ञ

हिंदी दिवस पर सीनेट हाल में हिंदी दिवस पर आयोजित राज्यस्तरीय हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता में कविता प्रस्तुत करती आईएमएसीएमटी की एक विद्यार्थी

Editor in Chief Dr. (Prof.) Maha Singh Poonia, Director, INSTITUTE OF MASS COMMUNICATION AND MEDIA TECHNOLOGY, KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA, Editor : Dr. Pardeep Rai, Asst. Prof., Editorial Committee: Dr. Abhinav Kataria, Asst. Prof., Dr. Tapesh Kiran, Asst. Prof., Mr. Rahul Arora, Asst. Prof., Mr. Amit Jangra, Asst. Prof., IMC&MT, Printed by : KUK Press Published By The Registrar, Kurukshetra University, Kurukshetra. E-mail id- newsletter@kuk.ac.in